RNI No.-MAHBIL/2016/66409
Postal Registration No.-PCE / 089 / 2016-2018
License to Post without
prepayment No.-WPP-255/31.12.2018

BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

भारतीय जैन संघटना समाचार

श्री शांतीलाल मुथ्था
संस्थापक

Editor - Prafulla Parakh

वर्ष 2 अंक 9 | मूल्य - रू.1/- | सितम्बर 2017 | पृष्ठ - 8

टूटते विवाह

बिखरते परिवार

"चलो इक बार फिर से... अज़नबी बन जाएं हम दोनों.."

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से.....2

मंथन: विवाह एवं परिवार -
गंभीर चुनौतियों के शिकार 3-4

BJS गतिविधियां.....5-6

अल्पसंख्यक सूचनाएं.....7

बीजेएस के आगामी परिचय सम्मेलन.....8

प्रिय आत्मजन,

स्वतन्त्रता दिवस के दो दिन पश्चात् , एक व्हाट्सअप पोस्ट मिली, लिखा था "प्रिय देशवासियों - सोने जा रही हूँ, अब 26 जनवरी को जागूँगी. तुम्हारी - देशभक्ति." यह कटु वास्तविकता है कि हमारी देशभक्ति को तो जैसे ग्रहण ही लग गया है. देशभक्ति हेतु रक्त की नदियाँ बहा देना या शहीद हो जाना जरूरी नहीं है. घर व मौहल्ले को स्वच्छ रखने के संकल्प के साथ "स्वच्छ भारत अभियान" में जुड़ना भी देशभक्ति ही है. गांधीजी ने 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया था, जिसके 75 वर्ष पूर्ण हुए. सुदृढ़ राष्ट्र के निर्माण व भावी पीढ़ियों के सुरक्षित व प्रगतिशील जीवन के लिए हमें भी आज बहुत कुछ छोड़ने की आवश्यकता है. स्वतंत्रता के फलवरूप मिले नागरिक अधिकारों के दुरुपयोग की स्थाई रूप से हममें घर कर चुकी मानसिकता, राष्ट्रीय चरित्र में मिला भ्रष्टाचार, देश के महत्व को नज़रअंदाज कर मात्र स्वयं के हितों की सोचना आदि बहुत कुछ समाज व देश हित में बदलने या छोड़ने की आवश्यकता है.

हरियाणा में 25 अगस्त, 2017 को हुए हिंसा के तांडव में अनेक निर्दोष नागरिक मारे गए. वाहनों, रेलगाड़ियों, रेल्वे स्टेशनों एवं सरकारी कार्यालयों को आग लगा दी गई. राष्ट्रीय संपत्ति को फूंकना फैशन सा बन चुका है. देश मात्र एक शब्द नहीं है अपितु उसके नागरिकों की निष्ठा एवं कर्तव्य परायणता का प्रतिफल है. देश के लिए दुर्भाग्य पूर्ण है कि हमारी गिनती आज भी तीसरे विश्व के देशों में होती है. विश्व के विकसित देश प्रथम या द्वितीय विश्व के देशों की सूची में हैं, जबकि लगभग 80 देश तीसरे विश्व की श्रेणी में इसलिए हैं क्योंकि आज भी वहां असमानता, गरीबी और भुखमरी, बाल मृत्यु दर, प्राथमिक स्वास्थ्य व शिक्षण का अभाव जैसी समस्याएं यथावत हैं. पिछले 7 दशकों में हमनें तमाम क्षेत्रों में विकास का ध्वज लहराया है जिसे विश्व ने सराहा भी है, बावजूद इसके हम तीसरे विश्व के देशों की सूची से बाहर नहीं निकल पाये हैं जो हमारे देश व देशवासियों के लिए अपमानजनक स्थिति से कम नहीं है. देश की स्वतन्त्रता के मूल्य को समझ, उसे आत्मसात कर नागरिक धर्म का निर्वहन करेंगे तब ही भारत माता की अस्मिता और अखंडता को हम सुरक्षित रख सकेंगे.

जुलाई, 2017 के अंतिम भाग में प्रकृति ने रौद्र रूप धारण किया. उत्तर गुजरात के उत्तरकांठा व राजस्थान के जालौर, सिरोही एवं बाडमेर जिलों में अतिवृष्टि के फलवरूप आयी बाढ़ में जनहानि के अतिरिक्त रास्तों व पुलों को भारी क्षति पहुंची. जालौर जिले के सांचोर में बड़ी संख्या में संचालित गौशालाओं के हजारों पशुओं की मौत हो गई. भारतीय जैन संघटना के महाराष्ट्र व राजस्थान के कार्यकर्ताओं के साथ स्वयं मैंने 10 अगस्त, 2017 को सांचोर में पथमेड़ा सहित विभिन्न गौशालाओं का भ्रमण किया. जैन समुदाय के अतिरिक्त अनेक सेवाभावी पंजीकृत व अपंजीकृत संस्थाओं द्वारा जीवदया पर बहुत ही बड़े स्तर पर लाखों की संख्या में पशुओं की सेवा व देखरेख का कार्य करते देखकर जहां मन प्रसन्न हुआ, वहीं गौशालाओं की दयनीय हालत व शेड के अभाव में पशुओं को खुले आकाश के नीचे रखने की स्थिति ने हृदय को द्रवित कर दिया. खुले आकाश में सर्दी, गर्मी व वर्षा ऋतु की मार सहन करते इन मूक पशुओं की लाचारी को प्रत्यक्ष रूप से देखा. वहां से लौटते समय इस पर चिंतन-मनन करता रहा कि आपदा प्रबंधन में बीजेएस के पिछले 25 वर्षों के अनुभव का इन आपदाग्रस्त पशुओं और गौशालाओं को स्थाई लाभ किस तरह प्रदान किया जाये ? मुझे सहर्ष सूचित करना है कि गौशालाओं की स्थितियों एवं उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप 20x80 फिट के प्रति 50 पशुओं के लिये पर्याप्त, विभिन्न गौशालाओं में कुल 50 शेड निर्माण का निर्णय लिया गया. पशुओं की रक्षा एवं सेवा कर उनसे लाभान्वित होना हमारी सांस्कृतिक विरासत है. मैं देशवासियों से व विशेषकर जैन समुदाय से अपील करता हूँ कि इन मूक पशुओं के बेहतर जीवन स्थितियों के निर्माण व जीवदया की संस्कृति के संरक्षण में वे आगे आएं.

मित्रों! जैन समाज में वैवाहिक समस्याओं के निवारण हेतु तथा समस्या के बदलते स्वरूपों के अनुसंधान में बीजेएस गत 25 वर्षों से नियमित परिचय सम्मेलनों का आयोजन देश भर में कर रहा है. बदलते समय में उच्च शिक्षित युवक-युवतियों में जीवन साथी चयन के संदर्भ में बदलती सोच एवं आवश्यकताओं के मद्देनजर विशेष प्रकार के परिचय सम्मेलनों का आयोजन भी गत कुछ वर्षों से किया जा रहा हैं. गुजरात बीजेएस ने 13 अगस्त, 2017 को विधवा-विधुर एवं तलाकशुदा हेतु राजकोट में परिचय सम्मेलन आयोजित किया. पुनर्विवाह के इच्छुक पुरुष-महिला प्रत्याशियों से प्राप्त 395 प्रविष्टियां, जैन समाज में टूटते विवाह एवं बिखरते हुए परिवारों की कहानी स्वयं कह रही थी. सम्मेलन का सूत्र संचालन मैंने स्वयं किया व प्रत्याशियों से साक्षात्कार कर समस्या व कारणों को समाज के समक्ष रखने करने का प्रयास भी किया. टूटते विवाहों की दिन-प्रतिदिन बढ़ती संख्या निश्चित ही चिंता का विषय है क्योंकि परिवार ही नहीं बिखर रहे अपितु अनेक गंभीर सामाजिक समस्याओं का जन्म हो रहा है. विवाहों के टूटने की संख्या तेजी से बढ़ रही है. बड़ी संख्या में विवाह टूटने के कारण क्या हैं ? आने वाले वर्षों में इस दर में ओर कितनी वृद्धि होगी ? क्या समस्या का समाधान संभव होगा ? ऐसे अनेक प्रश्न हैं, जिनका उत्तर समाज को खोजना है. इस विषय पर "मंथन" में सारगर्भित लेख के माध्यम से विषय पर चिंतन प्रस्तुत किया है, जिस पर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ.

प्रफुल्ल पारख
राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जैन संघटना

संपादक
प्रफुल्ल पारख, पुणे

कार्यकारी संपादक
निरंजन कुमार जुंवा जैन, अहमदाबाद

सदस्य
कैलाशमल दुगड़, चैन्नई सुरेश कोठारी, अहमदाबाद सुदर्शन जैन, बड़नेरा, वीरेंद्र जैन, इंदौर
महेश कोठारी, गोंदिया, संजय सिंघी, रायपुर, राजेंद्र लुंकड़, इरोड़

मंथन

विवाह एवं परिवार - गंभीर चुनौतियों के शिकार

संबंध और समझ का समीप का नाता है. जहां समझ है वहाँ स्नेह है. समझ सिवाय के संबंध जीए नहीं जाते अपितु खींचे जाते हैं. समझ सिवाय का स्नेह भी अर्थहीन होता है. जहां समझ है वहाँ स्नेह है और जहां स्नेह है वहाँ संबंध है. सम्बन्धों की सीधी रेखा खीचना संभव नहीं है. चढ़ाव-उतार की इस यात्रा में गंतव्य तक पहुँचने की कला सीखने में ही सफल दाम्पत्य का मंत्र छिपा है.

समझ, धैर्य तथा सहनशीलता के अभाव का वायरस हमारी कुछ व विशेषकर युवा पीढ़ीयों में गहराई तक घुस चुका है जो परिवार रूपी सॉफ्टवेयर को तहस-नहस कर रहा है. सृष्टी का अस्तित्व चाहे मनुष्य हो या फिर पशु-पक्षी या वनस्पति, प्रजनन प्रक्रियाओं पर संपूर्णतः आधारित है. मानव के स्थायी वसन के साथ सभ्यताओं के क्रमिक विकास का दौर प्रारम्भ हुआ. विश्व की विकसित या अविकसित प्रत्येक सभ्यता ने विवाह की व्यवस्था को परिवार नामक संस्था हेतु स्वीकारा है, किन्तु पाश्चात्य संस्कृति में जहां विवाह मात्र एक अनुबंध है वहीं भारत में यह एक पवित्र संस्कार तथा धार्मिक उत्सव है जिसे ईश्वर को साक्षी मानकर अग्नि के समक्ष सात फेरों से उन सात आवश्यक समझ (वचनों) को जीवन पर्यन्त निभाने की प्रतिज्ञा ली जाती है.

उर्दू शब्दकोश से 'तलाक' व अँग्रेजी शब्दकोश से 'डायवोर्स' शब्द देश में प्रचलित हुए. हिन्दी शब्दकोश में ऐसे शब्द को स्थान ही नहीं है जो तलाक या डायवोर्स का पर्यायवाची हो, क्योंकि हमारी भाषा ही हमारी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है और भारतीय संस्कृति में विवाह के टूटने या पति-पत्नि के अलग-अलग रहने का प्रावधान ही नहीं रखा गया व विवाह सात जन्मों का बंधन माना जाता रहा. वर्तमान समय में विवाह एवं परिवार की संस्था गंभीर स्थितियों का सामना कर रही है. देश की संस्कृति में जहां विवाह के टूटने की कल्पना को स्थान ही नहीं था वहीं आज विवाह टूट ही नहीं रहे अपितु उनकी संख्या वर्ष=प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है. निःसंदेह अमेरिका में इसकी 50% दर के सामने यह अपने देश में यह नगण्य-सी बतलाई जाती है, किन्तु कुछ आंकड़े हैं जो सभी को चौंका देने हेतु पर्याप्त हैं. वर्ष 2010 में मुंबई में 5245 तलाक के केस न्यायालयों में आए, जबकि वर्ष 2014 के नवंबर माह यानि मात्र 9 महीनों में 11667 दर्ज हुए. कोलकाता में वर्ष 2003 में 2338 केस के मुक़ाबले 2014 नवंबर माह तक 8347 केस दर्ज़ हुए. गत एक दशक में 350% तक की वृद्धि निश्चित ही चिंता का विषय है.

गत कुछ दशकों में संस्कृति के वैश्वीकरण व सामाजिक परिवर्तनों की आंधियों के परिणामस्वरूप लगभग सभी समाजों में महिलाओं की शैक्षणिक, सामाजिक व आर्थिक स्थितियों में सुधार हुआ हैं. लिंग आधार पर सदियों से प्रस्थापित असमानताओं एवं भेदभाव की परम्पराएं नेस्तनाबूद हुई हैं. विवाह की अवधारणाओं के प्रति आमतौर पर नज़रिये में भारी बदलाव आया है. प्रेम विवाहों की संख्या बढ़ी है वहीं विवाह का उत्तरदायित्व जो परिवार के नियंत्रण में था अब प्रत्याशियों की इच्छा व रुचि पर निर्भर हो गया है. बदलते सामाजिक परिवेश में इस तरह के परिवर्तनों से चौकने की बजाय इन्हें स्वाभाविक तथा सामान्य नज़रिये से देखना अधिक उपयुक्त लगता है. वैदिक काल में इस तरह के विवाह सामान्य तो नहीं थे किन्तु समाज स्वीकृत अवश्य थे. राजा दुष्यंत का शकुंतला से गंधर्व विवाह व सीता का स्वयंवर में श्रीराम का चयन उदाहरहण स्वरूप समझे जा सकते है.

आधुनिक युग में नित बदलते सामाजिक परिवेश में जहां नवीन प्रकार की समस्याएं उद्भवित हुई हैं, वहीं पिछले कुछ दशकों में अस्तित्व में बनी हुई समस्याओं के स्वरूपों में परिवर्तन आया है. टूटते विवाह के कारणों का विश्लेषण एवं समस्या के निराकरण में कुछ स्पष्ट अभिप्राय प्रस्तुत हैं :

विश्वास एवं पारदर्शकता का अभाव

व्यक्तिवादिता से ग्रसित आज की पीढ़ी परस्पर विश्वास, आदर-सम्मान, योग्य संवादिता एवं पारिवारिक मूल्यों के जतन की संस्कृति से सिंचित नहीं है. अब विश्वासयुक्त योग्य वातावरण निर्माण में परस्पर सम्मान या श्रेष्ठ संवादिता के साथ दैनिक जीवन में नवीनताओं को आवश्यक रूप से जोड़ना होगा, क्योंकि आधुनिक युग में व्यक्तिगत जीवन अंगत या गोपनीय नहीं रहे. अब ऐसी पारिवारिक संस्कृति के निर्माण की आवश्यकता है जिसमें मोबाईल, कम्प्यूटर, फेसबुक आदि के कोड (Code) गोपनीय न हों. टेलीफ़ोन calls की विगत परिवारजन को स्वेच्छा से उपलब्ध करा कर जैसे प्री-पेड मोबाईल बिल व्यवस्था आदि से परस्पर विश्वास संपादित किया जाना चाहिए.

अहंकार

आज की सुशिक्षित पीढ़ी में यह रोग सामान्यतः व्याप्त है, जो पति-पत्नि में टकराव का कारण बन रहा है. दोनों में से कोई एक, अहंकार छोड़ जीवन साथी को समझने की तैयारी नहीं दर्शाता. उसे लगता है हर बार, मैं ही क्यों ? जड़ वैचारिक दायरे से बाहर आकर ही जीवन साथी के प्रति विकसित दुर्लक्षता को समाप्त किया जा सकता है. पति जिसकी पत्नि से नहीं बनती थी एक संत के पास गया और कहा कि "मैं उसे समझा-समझा के थक गया हूँ. वो मुझे समझने को तैयार ही नहीं है" संत ने उत्तर दिया "तुझे समझाने की नहीं समझने की आवश्यकता है. हो सकता है वो तुझे समझाती हो और तू समझने को तैयार न हो" दोनों में से एक को तो समझना रहा अन्यथा समस्या का अंत नहीं होगा. स्वयं के विचारों में सिमटे आज के युगल जीवन को कड़वाहट से भर रहे हैं. जीवन में मधुरता होगी तो सहवास सौलह कला खिलेगा, अन्यथा घर की दीवारों को भी रोने का मन करेगा.

धैर्य, सहनशीलता एवं सामंजस्य का अभाव

आत्मीयता एवं स्पंदनता का बढ़ता अभाव व्यक्ति की स्वार्थी मानसिकता तथा कटु स्वभाव का कारण है. विवाह के फलस्वरूप घर में आई बहू से प्रायः यह अपेक्षा की जाती है कि वह सर्वगुण सम्पन्न हो. आधुनिक युग में जन्मी और पल्लवित हुई युवतियों पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों को समझने का ठीक से अवसर ही प्राप्त ही नहीं होता. उनसे धैर्य, सहनशीलता जैसे आचार-विचार एवं व्यवहार की अपेक्षा करना पारिवारिक कलह व क्लेष का मुख्य कारण होगा. बहू को परिवार का सही अर्थों में सदस्य बनाने हेतु पति ही नहीं अपितु परिवार के सदस्य विशेषकर बुजुर्गजन को धैर्य व सहनशीलता दिखलानी होगी. उसके साथ बेटी जैसा व्यवहार होगा तब ही बात बनेगी.

बाह्य सम्बन्धों का विकास

बदलते सामाजिक परिवेश में, युवास्था एवं शिक्षाकाल में किसी तरह के आत्मीय या बाह्य संबंध स्थापित होना अब सामान्य-सी बात है. किन्तु विवाह के पश्चात भी, उन सम्बन्धों को कायम रखना विवाहों के टूटने का कारण बन रहा है. मानसिक तनावयुक्त जीवन जो आधुनिक युग की देन है, पति-पत्नि के भटक कर अन्य पात्रों के साथ सम्बन्धों के विकास का

क्रमशः

सिलसिला भी बड़ी मात्रा में विवाह के टूटने का कारण बन रहा है. प्रेम एवं आत्मीयता परिवार से बाहर प्राप्त करने की लालसा ही आज अनेक परिवारों के बिखराव का कारण है. विवाह एवं परिवार के उद्देश्यों के प्रति व्यक्तिगत सामाजिक उत्तरदायित्वों को समझकर ही पति-पत्नि परिवार को जीवित रख सकेंगे.

प्रेम विवाह और घटता शारीरिक आकर्षण

हम सभी भली भांति अवगत हैं कि पिछले कुछ दशकों में लगभग जैन समाज सहित अन्य समाजों में भी प्रेम विवाह का प्रचलन बढ़ा है. विवाह के प्रति आस्था, गंभीरता, समझ व उत्तरदायित्वों की अपेक्षा सामान्यतः शारीरिक आकर्षण का महत्व प्रेम विवाह में अधिक होता है. कालांतर में प्रेम विवाह जिसमें कभी शारीरिक आकर्षण मुख्य केंद्र में था कुछ समय पश्चात चमक खो देता है, जो मतभेदों, तकरारों के रूप में विकसित होकर अन्ततः टूटने के कगार पर खड़ा हो जाता है. परिवार के वरिष्ठ सदस्य युवा पीढ़ी को प्रेम विवाह की गुणों अवगुणों से समय रहते शिक्षित करें तो समस्या का कुछ सीमा तक निदान संभव होगा.

अनपेक्षित अपेक्षाएँ एवं दोहरे मापदंड

यह शिकायत आमतौर पर की जाती है कि हम दोहरे मापदण्डों को जीने के आदि हो चुके हैं. अपने लिए कुछ व अन्य के लिए और कुछ, इस व्याधि से लगभग हम सभी पीड़ित हैं. किन्तु जब बेटी और बहू के मध्य भेद की रेखा खीच दी जाती है, तो छोटे-छोटे कलह से प्रारम्भ होकर इस यात्रा का अंत विवाह के टूटने से होता है. बेटी अपनी हो या अन्य परिवार की, दोनों ही ससुराल में आत्मीयता व अपनापन चाहती हैं. जमाना बदल चुका है, अब बहू को बेटी कह देने भर से काम चलने वाला नहीं हैं. यह घर के वरिष्ठ सदस्यों का उत्तरदायित्व है कि बहू को सम्मान दिल से दें, उसके साथ भेद भाव न करें. उसमें यदि कमियां हैं, तो समझदारी से धैर्य के साथ दूर करने के उपायों हेतु प्रयास करें, परिणाम निश्चित ही बेटे व परिवार हेतु सुखद रहेंगे.

अनावश्यक हस्तक्षेप

वर्तमान समय में छोटे-छोटे परिवार अस्तित्व में आए हैं, जिनमें अधिकतम दो संताने होती हैं. यह एक बहुत बड़ा कारण है कि संतानों के प्रति सीमा से अधिक परवाह करने का भाव या मानसिकता अभिभावकों में बनी रहती है, जो वर्तमान में विवाहों के टूटने के कारणों में मुख्य है. सुसराल में रह रही बेटी से बार-बार बातचीत करना, उसके परिवार के मामलों में बेटी को अनावश्यक सलाह देना या हस्तक्षेप करना, बेटी के हित में हो न हो, किन्तु ससुराल पक्ष हेतु अहितकारी सिद्ध हो रहा है. माता-पिता के हाथों से बेटी के घर में आग लगाना अब आम होता जा रहा है.

इतना ही नहीं बेटे के माता-पिता या वरिष्ट परिवारजन भी बेटे-बहू के बीच तनाव या मतभेद उत्पन्न करते देखे जा सकते हैं. बेटे-बहू यदि दूसरे नगर/शहर में रहते हों, तो उनके जीवन यापन के तौर तरीकों में गलतियाँ निकालना या परिवार के कायदे नियम लादने की अनावश्यक कोशिश की जाती है. वरिष्ठजन अधिकार दर्शाने के स्थान पर बेटे-बहू के जीवन यापन को स्वीकार करें, अब यह समय की मांग है.

निर्दयता एवं हिंसा

जैन दर्शन का मुख्य आधार ही अहिंसा जैसा परमतत्व है. जैन समाज के परिवारों मे क्रूरता, निर्दयता, हिंसा या दुर्व्यवहार की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती, किन्तु दुर्भाग्यवश जैन परिवारों में अपव्यवहार के किस्से बढ़ रहे हैं. परिवार के सदस्यों विशेषकर पति-पत्नि के मध्य समझ एवं सामांजस्य के अभाव में रिश्तों में कड़वाहट आ रही है जिसकी परिणति शाब्दिक या शारीरिक हिंसा में हो रही है. हिंसा पुरुषवर्ग द्वारा ही नहीं अपितु परिवार की महिला सदस्यों द्वारा भी की जाती है. कहते हैं मनुष्य आदते बदल सकता है स्वभाव नहीं. यही कारण है कि ऐसे परिवारों में जहां नित कलह होता हो, विवाह के टूटने व परिवार के बिखरने की संभावनाएं अधिक रहती हैं. आज सास-बहू ही नहीं अपितु पिता-पुत्र के सम्बन्धों में भी वो आत्मीय संवेदनशीलता तथा उत्तरदायी गर्मजोशी का अभाव है. लगता है जैसे मजबूरी में एक दूसरे को सह रहे हों. परिवार के सदस्यों को उनके जीवन में आत्मीय एवं जीवंत सम्बन्धों के महत्व को समझना ही होगा, अन्यथा परिवार बिखरते ही रहेंगे.

अभिभावकों के बदलते उत्तरदायित्व

जैन समाज की युवा पीढ़ी विशेषकर युवतियाँ बड़ी संख्या में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही है. अधिकांश को शिक्षण अभ्यास के दौरान परिवार से दूर रहना पड़ता है, फलस्वरूप पारिवारिक या सामाजिक मूल्यों की अहमियत, पारिवारिक संस्कृति, उत्तरदायित्वों को समझने या आत्मसात करने का अवसर ही नहीं मिलता. परिवार में आई बहू या दूसरे परिवार में गई बेटी दोनों की स्थिति एक समान ही होती है क्योंकि वे सामान्यतः गृहकार्य में निपुण नहीं होती. दूसरी तरफ आज भी बहू से वह सब अपेक्षित है जो कुछ दशको पूर्व एक सामान्य-सी शिक्षित व गृहिणी से अपेक्षित था. उच्चशिक्षित बहू को हम लाते अवश्य हैं किन्तु अपेक्षा यही होती है कि वह स्वयं को कुशल गृहिणी साबित करे, बावदूद इसके कि वह व्यवसाय या नौकरी के साथ अर्थोपार्जन कर रही है. इन परिस्थितियों में बहू को भलाबुरा कहना व उसके माता-पिता को कोसना सर्वथा अनुचित है.

जिनके संतानों के विवाह हुए हैं, ऐसे अभिभावकों के पारिवारिक उत्तरदायित्वों का दायरा अब बढ़ गया है. उन्हें परिवार को भी संभालना है और बेटे-बहू के उत्तरदायित्वों का भी निर्वहन करना है क्योंकि यह समय की मांग है. जिन माता-पिता ने समय की नजाकत को समझते हुए अतिरिक्त उत्तरदायित्वों को सहर्ष स्वीकार किया है, परिवार की शांति व प्रगति का कारण बन रहे हैं. बहू वह पौधा है जिसकी जड़े कहीं ओर जमी हुई थी लेकिन अब उसे उखाड़कर दूसरी जगह रोपित किया गया है. उसे हवा, पानी, रोशनी, खाद और देखभाल सभी की आवश्यकता है. इस वास्तविकता को समझेंगे तो ही बेटे-बहू के प्रति अपेक्षित न्याय कर सकेंगे.

आधुनिक युग में नवीन समस्याओं के उत्तर प्राचीन परम्पराओं, संस्कृति या ग्रन्थों में ही खोजते रहेंगे तो नित बदलती जीवन शैली से युक्त जीवन संग्राम में पराजित होते ही रहेंगे. विवाह के टूटने के कारणों के विश्लेषण से अधिक महत्वपूर्ण समाधानों हेतु प्रयास करना है. विवाह हेतु परम्पराओं से हटकर, आदरणीय मुथ्थाजी द्वारा रिश्तें तय करने की प्रस्तावित नवीन पद्धति को, हमारी नई पीढ़ी पर विश्वास रखते हुए उन्हें ही उनकी वैचारिकी व प्राथमिकताओं के अनुकूल कुछ योग्य पात्र परिवारजन को सुझावित करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए. इस सुझाव में विभिन्न समस्याओं के कुछ सीमा तक निराकरण के अतिरिक्त विवाहों के टूटने की समस्या के निदान की प्रबल संभावनाएं दिखाई देती हैं. विवाह टूटने के बढ़ते प्रचलन के संदर्भ में आदरणीय मुथ्थाजी ने वर्ष 2010 में बीजेएस के राष्ट्रीय अधिवेशन में यह घोषणा की थी की आगामी मात्र कुछ दशकों में प्रत्येक दो विवाह में से एक विवाह टूटेगा. यह स्मरण में रखना होगा कि समय व काल के लिए 'U Turn' नहीं होता और समय रहते उत्तरदायी अभिगम से परिवार व समाज को तहस-नहस करने चल पड़ी उस आंधी को मोड़ नहीं सके तो गति अवश्य कम कर सकेंगे.

बीजेएस गतिविधियाँ एवं समाचार

जैन परिचय मिलन (विधवा-विधुर, परित्यक्ताओं हेतु), आत्मीय कालेज-राजकोट (गुजरात)-13 अगस्त, 2017, प्रविष्टियां - 395

स्मार्ट गर्ल - ट्रेनर्स ट्रेनिंग - दिनांक 11-12 अगस्त, स्थान- कुंवरबाई धर्मशाला, जामनगर (गुजरात), प्रतिभागी संख्या - 54

स्मार्ट गर्ल कार्यशाला – दिनांक 2-3 अगस्त, स्थान- बोन्गाईगाँव-गुवाहटी(असम), प्रतिभागी संख्या 39, प्रशिक्षिका - श्रीमती अस्मिता देसाई, राजकोट

भारतीय जैन संघटना के श्री ज्ञानचंद आंचलिया, सिरकाली व्दारा 15 वां नि:शुल्क आँख जाँच शिविर के आयोजन में अरविन्द हास्पिटल, पांडिचेरी में 900 रोगियों का परीक्षण एवं 260 मरीजों का मोतियाबिंद के नि:शुल्क आपरेशन

महाराष्ट्र में सम्पन्न हुए "व्यवसाय विकास कार्यक्रम'

बिजनेस गुरु - श्री राकेश जैन 'प्रखर', इंदौर व्दारा दिनांक 1 से 5 अगस्त, 2017 तक महाराष्ट्र राज्य के विभिन्न शहरों में व्यवसाय विकास कार्यक्रम प्रस्तुत किये, जिसमें 2500 से अधिक व्यवसयियों ने उपस्थिति दर्ज की. इस दौरान कार्यक्रम प्रभारी के रूप में श्री महेंद्र मंडलेचा (राज्य सचिव), श्री दीपक चोपड़ा (राज्य कार्यकारिणी सदस्य), श्री केयूर कामदार-लातूर,-श्री संजय देवड़ा-कलम्ब, श्री प्रतापमल बाफना-मालेगांव, श्री सुमतिलाल-संगमनेर, श्री कांतिलाल श्रीश्रीमाल-पाचोरा, श्री पारस चौरड़िया-औरंगाबाद, श्री अक्षय भिकमसी-खामगांव, श्री हिमांशु वोरा-यवतमाल, श्री रोशन डागा-हिंगनघाट, श्री नरेश जैन-नागपुर उपस्थित रहे. इस कार्यक्रम से मुख्य रूप से जैन समाज के युवकों एवं व्यवसायियों ने व्यवसाय क्षेत्र में तेजी से आ रहे बदलाव, टेक्नालजी का उपयोग, संभावित नवीन व्यवसाय उपक्रम, एक्सपोजर को जाना-समझा एवं मार्गदर्शन प्राप्त किया.

कर्नाटक / तमिलनाडू बीजेएस गतिविधियाँ

स्मार्ट गर्ल कार्यशाला – दिनांक 12-13 अगस्त, स्थान- रोटरी पी.यू.कालेज, रानेबन्नुर (कर्नाटक), प्रतिभागी संख्या-85, प्रशिक्षिका - श्रीमती विमलाश्री, मैसूर

स्मार्ट गर्ल कार्यशाला – दिनांक 14-15 अगस्त,
स्थान- स्थानक भवन, अक्कीपेट (कर्नाटक),
प्रतिभागी संख्या – 40, प्रशिक्षक – श्री दिनेश पालरेचा, बंगलौर

स्मार्ट गर्ल कार्यशाला – दिनांक 12-13 अगस्त,
स्थान- श्री आदिनाथ जैन भवन, शिमोगा (कर्नाटक), प्रतिभागी संख्या – 41,
प्रशिक्षिका - श्रीमती श्वेता बागमार, गडग

स्मार्ट गर्ल कार्यशाला – दिनांक 17-18 अगस्त,
स्थान- डोडनवार हाईस्कूल, बेलगाम (कर्नाटक),
प्रतिभागी संख्या – 56, प्रशिक्षिका श्रीमती रुमा पाटिल, बेलगाम

स्मार्ट गर्ल कार्यशाला – दिनांक 12-13 अगस्त,
स्थान- श्री जिनेश्वर मीडिया कंपनी चामराजपेट, बैंगलोर (कर्नाटक),
प्रतिभागी संख्या: 30, प्रशिक्षक श्री रणमल गुलेचा, बैंगलोर

स्मार्ट गर्ल कार्यशाला – दिनांक 11-12 अगस्त, स्थान- एल.एम. भारतेश इंग्लिश मीडियम स्कूल, बेलगाम (कर्नाटक), प्रतिभागी संख्या – 48,
प्रशिक्षिका - श्रीमती संजीवनी कदम्बा, बेलगाम

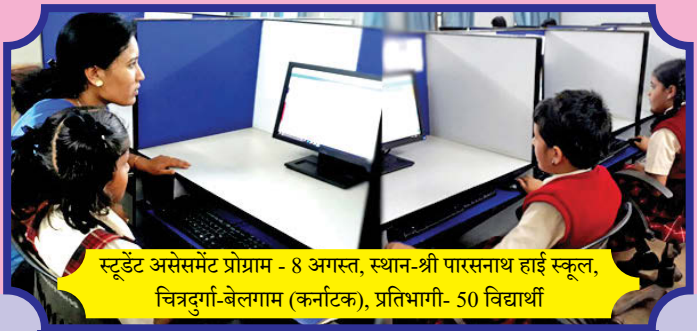

स्टूडेंट असेसमेंट प्रोग्राम - 8 अगस्त, स्थान-श्री पारसनाथ हाई स्कूल,
चित्रदुर्गा-बेलगाम (कर्नाटक), प्रतिभागी- 50 विद्यार्थी

विद्यार्थी प्रतिभा पुरुस्कार, मैसूर (कर्नाटक) दिनांक 15 अगस्त,
प्रतिभागी- 45 विद्यार्थी

विद्यार्थी प्रतिभा पुरुस्कार, होसपेट (कर्नाटक) दिनांक 12 अगस्त,
प्रतिभागी- 115 विद्यार्थी

स्मार्ट गर्ल ट्रेनर ट्रेनिंग (FJEI) कार्यशाला – दिनांक 5-6 अगस्त, स्थान- जी.एस.एस.कालेज, वेपेरी-चैन्नई (तमिलनाडू), प्रतिभागी संख्या – 60, प्रशिक्षक – श्री राजेंद्र लुंकर, इरोड

अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति आवेदन हेतु अब आय प्रमाणपत्र आवश्यक

अल्पसंख्यक मंत्रालय, भारत सरकार ने आदेश दिनांक 22 अगस्त, 2017 से राज्य के अधिकृत सरकारी अधिकारी द्वारा जारी आय प्रमाणपत्र को वर्तमान शैक्षणिक वर्ष 2017-18 से आवेदन के साथ संलग्न करना आवश्यक कर दिया है. भारत सरकार की "MAXIMUM GOVERNANCE-MINIMUM GOVERNMENT" की नीति के तहत् शैक्षणिक वर्ष 2016-17 से सरकारी आय प्रमाण पत्र के स्थान पर विद्यार्थी द्वारा सादे कागज पर पारिवारिक आय की घोषणा को मान्य रखने का निर्णय लिया गया था, जिसे अब वापस ले लिया गया है.

विद्यार्थी ध्यान दें कि मांगे गए विविध दस्तावेज़ों के साथ अब सरकारी अधिकारी द्वारा जारी आय प्रमाण पत्र की फोटो कॉपी को आवेदन पत्र के साथ संलग्न कर शिक्षण संस्थान में जमा करना होगा जिसमें विद्यार्थी अध्ययनरत है. ऑनलाईन आवेदन में मांगे गए दस्तावेज़ को SCAN कर UPLOAD न करें क्योंकि अब यह आवश्यक नहीं हैं.

अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति में ऑनलाईन आवेदन का शिक्षण संस्थान व्हेरीफिकेशन

अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति योजनाओं में विद्यार्थियों द्वारा किये गए ऑनलाईन आवेदन उनके शिक्षण संस्थान के खाते में व्हेरीफिकेशन हेतु स्वचालित तरीके से ट्रान्सफर होते हैं. यह शिक्षण संस्थान का उत्तरदायित्व है कि उन्हें ऑनलाईन प्राप्त हुए सभी आवेदनों का ऑनलाईन व्हेरीफिकेशन (आवेदन में रह गई त्रुटियों को सुधारकर) उनके लिए निर्धारित समय अवधि में करें. नेशनल पोर्टल पर यह सुविधा उपलब्ध है कि STUDENT LOGIN द्वारा आवेदन का STATUS विद्यार्थी द्वारा जांचा या देखा जा सकता है. आवेदन के कुछ माह या एक वर्ष पश्चात् भी अनेकों विद्यार्थियों को यह रिपोर्ट मिलती है कि उनका आवेदन उनके शिक्षण संस्थान के स्तर पर व्हेरीफिकेशन की प्रकिया में है, जिसका अर्थ है कि विद्यार्थी के आवेदन पर व्हेरीफिकेशन की प्रक्रिया पूर्ण कर शिक्षण संस्थान द्वारा राज्य सरकार के संबंधित विभाग को आवेदन अग्रेषित करना अब भी शेष है. शिक्षण संस्थानों के इस बिनउत्तरदायी रवैये के कारण हजारों विद्यार्थी छात्रवृत्ति पाने से वंचित रह जाते हैं.

विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों को सलाह दी जाती है कि संबंधित शिक्षण संस्थान से पुष्टि कर लें कि उनका आवेदन पत्र व्हेरीफिकेशन कर अग्रेषित कर दिया गया है. शिक्षण संस्थान द्वारा यदि असहकार दर्शाया जा रहा हो तो राज्य के नोडल ऑफिसर से संपर्क करना हितावत होगा.

नवीन आवेदन हेतु समयावधि बढ़ी

अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति योजनाओं में नवीन (Fresh) व नवीनीकरण (Renewal) दोनों तरह के आवेदन की 31 अगस्त को समाप्त होने वाली अवधि 1 माह बढाई गई है. अल्पसंख्यक मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली से प्राप्त सूचना अनुसार अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति योजनाओं में ऑनलाईन आवेदन की अंतिम तिथि अब 30 सितंबर, 2017 की गई है.

महत्वपूर्ण सूचना

जिन विद्यार्थियों ने अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति योजनाओं में ऑन लाईन आवेदन की प्रक्रिया जून से लेकर अगस्त माह के मध्य पूर्ण कर ली है, उन्हें अल्पसंख्यक मंत्रालय के आदेश दिनांक 22 अगस्त, 2017 के निर्देश अनुसार ऑनलाइन आवेदन की प्रति के साथ मांगे गए सभी दस्तवेज़ों के साथ अधिकृत सरकारी अधिकारी द्वारा जारी आय प्रमाणपत्र की फोटो कॉपी भी संलग्न करना आवश्यक होगा.

जिन विद्यार्थियों ने उनके शिक्षण संस्थान में ऑनलाईन आवेदन की प्रति दस्तवेज़ों के साथ जमा करा दी है, उन्हें सलाह दी जाती है कि वे शीघ्रति शीघ्र आय प्रमाण पत्र की फोटो कॉपी भी उनके शिक्षण संस्थान में जमा कराएं.

'नई उड़ान' में अब ऑनलाईन आवेदन किए जाएँगे

अल्पसंख्यक प्रत्याशियों जिन्होने Union Public Service Commission, Staff Selection Commission तथा State Public Service Commission की प्राथमिक (Prelims) परीक्षा उत्तीर्ण की है, नई उड़ान योजना के तहत एक मुश्त आर्थिक सहायता प्रदान करने का प्रावधान है. योजना का उद्देश्य उपरोक्त आयोगों द्वारा ली जाने वाली Prelims परीक्षा में उत्तीर्ण प्रत्याशियों को सरकारी नियुक्तियों में स्पर्धा हेतु सुसज्ज करना है.

वर्ष 2017-18 हेतु "नई उड़ान" योजना के तहत वे प्रत्याशी जिन्होने Prelims परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है, आर्थिक सहायता हेतु 'Nai Udaan' के Portal पर ऑनलाईन आवेदन कर सकते हैं. आवेदन करने संबंधी अधिक जानकारी हेतु अल्पसंख्यक मंत्रालय, नई दिल्ली के श्री डी. एन. महतो फोन 011-24302549 से संपर्क करें. वे प्रत्याशी जिनकी पारिवारिक वार्षिक रू॰ 4.5 लाख से कम हैं, आवेदन हेतु पात्र होंगे. योजना की सम्पूर्ण जानकारी हेतु 'naiudaan-mom.gov.in' को log in करें.

ऑनलाईन आवेदन प्रक्रियाओं पर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति योजनाओं से जैन समुदाय महत्तम रूप से लाभान्वित हो, इस उद्देश्य से बीजेएस ने संचालित 'राष्ट्रस्तरीय अल्पसंख्यक लाभ जनजागृति अभियान' के अंतर्गत अब व्यावहारिक सेवाओं के क्षेत्र मे प्रवेश किया है. विद्यार्थियों को मिलने वाली छात्रवृत्तियों में ऑनलाईन आवेदन प्रत्येक नगर शहर में अब समाजजन द्वारा किए जाएँ व स्थानीय स्तर पर विद्यार्थियों को तत्काल मार्गदर्शन मिले, इस उद्देश्य से एक विशेष प्रशिक्षण शिविर में वाघोली – पुणे स्थित बीजेएस शैक्षणिक पुनर्वसन केंद्र में विद्यार्थियों को सेवाएँ देने के ईच्छुक महाराष्ट्र के 18 जिलों के 47 समाजजन को 15 अगस्त,2017 को 'ऑनलाईन एप्लीकेशन प्रोसेसिंग' पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कम्प्यूटर लैबोरेटरी में मुख्य प्रशिक्षक श्री निरंजन जुंवा जैन, अहमदाबाद ने प्रदान किया व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रफुल्ल पारख ने प्रशिक्षणार्थियों को कार्यप्रणाली संबंधी आवश्यक मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन प्रदान किया. इन प्रशिक्षण प्राप्त महानुभावों ने उनके नगर/ शहर में योजनाबद्ध तरीके से विद्यार्थियों के ऑनलाईन आवेदन करने का कार्य प्रारम्भ किया है.

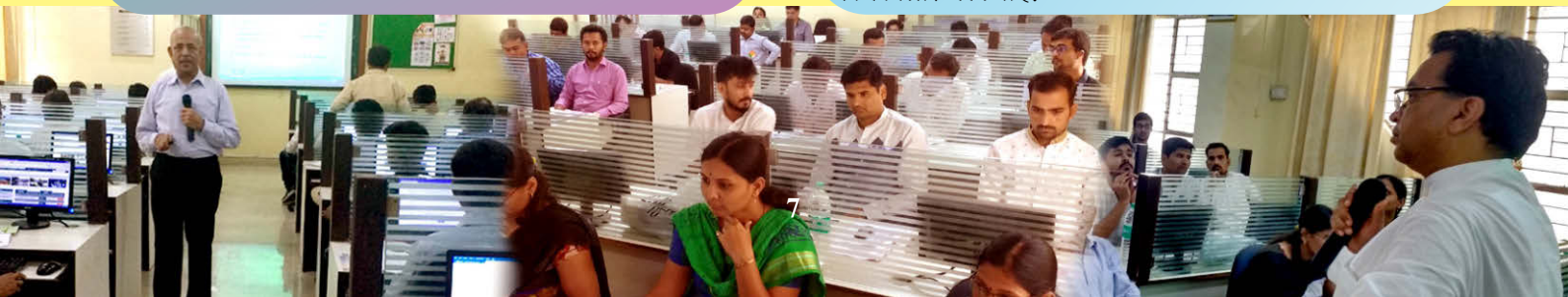

बीजेएस के आगामी परिचय सम्मेलन

दिनांक		संपर्क
रविवार, 24 सितम्बर, 2017 पंजीयन की अंतिम दिनांक: 15 सितम्बर 2017	भारतीय जैन संघटना, पुणे शहर (महाराष्ट्र) **जैन विधवा, विधुर, तलाकशुदा एवं 30+ अविवाहित उम्मीदवार** **स्थान :** महावीर प्रतिष्ठान, सलिसबरी पार्क, पुणे	श्रीपाल लालवानी: 98239 77472 पृथ्वीराज धोका: 99224 36401
रविवार, 24 सितम्बर, 2017 पंजीयन की अंतिम दिनांक: 14 सितम्बर 2017	भारतीय जैन संघटना, बंगलौर (कर्नाटक) **जैन मेट्रीमोनियल गेट-टू-गैदर (उच्च शिक्षित, प्रोफेशनल्स)** **स्थान :** कपूर भवन, गाँधी नगर, बंगलौर	सुरेश धोका: 93410 66908 जैन सुरेश मेहता: 98455 01150
रविवार, 1 अक्टूबर, 2017 पंजीयन की अंतिम दिनांक: 25 सितम्बर 2017	भारतीय जैन संघटना, नागपुर (महाराष्ट्र) **सकल जैन समाज उच्च शिक्षित युवक-युवती** **स्थान :** नेवैद्यम इस्टोरिया, चिखली कळमना रोड, सूर्य नगर, नागपुर	प्रकाश मारवडकर: 93732 18586 नरेश जैन: 93731 00022
रविवार, 1 अक्टूबर, 2017 पंजीयन की अंतिम दिनांक: 20 सितम्बर 2017	भारतीय जैन संघटना, तमिलनाडु एंव श्री तमिलनाडु जैन महामंडल, चैन्नई **जैन विधवा, विधुर, तलाकशुदा एवं 30+ अविवाहित उम्मीदवार** **स्थान :** श्री शांतीनाथ जैन भवन, पट्टॉलम, चैन्नई	राजेन्द्र दुगड: 94440 40679 ललित बोकडिया: 90953 66188 महावीर बोहरा: 94432 91217
सोमवार, 2 अक्टूबर, 2017 पंजीयन की अंतिम दिनांक: 20 सितम्बर 2017	भारतीय जैन संघटना, इंदौर (मध्यप्रदेश) **जैन विधवा, विधुर, तलाकशुदा एवं 30+ अविवाहित उम्मीदवार** **स्थान :** दस्तूर गार्डन, फूटी कोठी रिंग रोड, इंदौर	राजेन्द्र दुगड: 94440 40679 ललित बोकडिया: 90953 66188 महावीर बोहरा: 94432 91217
रविवार, 22 अक्टूबर, 2017 पंजीयन की अंतिम दिनांक: 30 सितम्बर 2017	भारतीय जैन संघटना, उदयपुर (राजस्थान) रिश्तों की नई पहल - चयन - 2017 **राष्ट्रीय सकल जैन उच्च शिक्षित युवक-युवती परिचय सम्मेलन** ओपेरा गार्डन & बेन्केवेट हाल, होटल एबेएन्स के पास, प्रताप नगर-भुवाना बायपास, उदयपुर.	राजकुमार फत्तावत: 94141 61279 अभिषेक संचेती: 94141 12980

इच्छुक प्रत्याशी उक्त परिचय सम्मेलनों में सहभागिता हेतु ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन : bjsmm.bjsapps.com पर शीघ्र करें

To,

RNI No.-MAHBIL/2016/66409
Postal Registration No.-PCE / 089 / 2016-2018
License to Post without prepayment No.-WPP-255/31.12.2018
Published on 7th of Every Month
Posted at Market Yard PSO, Pune On- 10th of Every Month

If undelivered Please Return To
BJS Bharatiya Jain Sanghatana
Level IV, Muttha Towers, Loop Road, Near Don Bosco Church, Yerawada, Pune 411006
Tel. : 020 4120 0600, 4128 0011, 4128 0012
Website: www.bjsindia.org **Email :** info@bjsindia.org **Facebook :** www.facebook.com / BJSIndiacommunity **Tweeter :** BJS_India

मुद्रक तथा प्रकाशक – प्रफुल्ल पारख द्वारा भारतीय जैन संघटना के लिये प्रभात प्रिंटिंग वर्क्स, 427, गुलटेकड़ी, पुणे – 411037 से मुद्रित तथा मुथ्था टावर, लूप रोड, नियर डॉन वास्को चर्च, येरवडा, पुणे – 411006 से प्रकाशित. सम्पादक – प्रफुल्ल पारख, फ़ोन – (020) 41200600